SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में अम्बेडकर के विचार

पूनम, (Ph. D.), समाजशास्त्र विभाग,
मानवेन्द्र सिंह, समाजशास्त्र विभाग,
एस. एस. कॉलेज, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
पूनम, (Ph. D.), समाजशास्त्र विभाग,
मानवेन्द्र सिंह, समाजशास्त्र विभाग,
एस. एस. कॉलेज, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 24/07/2021
Revised on : -----
Accepted on : 31/07/2021
Plagiarism : 02% on 24/07/2021

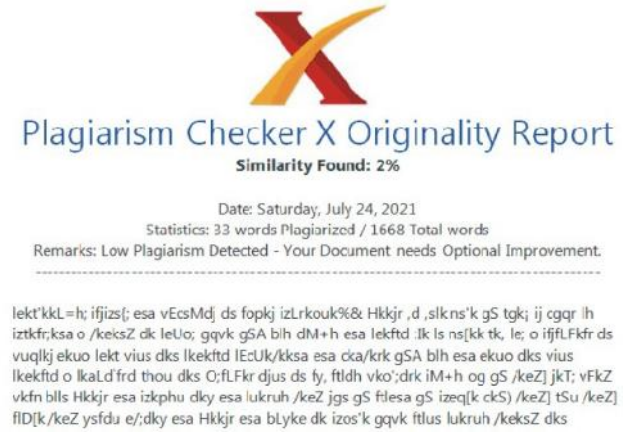
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Saturday, July 24, 2021
Statistics: 33 words Plagiarized / 1668 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

lekt'kkL=h; ifjizs{; esa vEcsMdj ds fopkj izLrkouk%& Hkkjr ,d ,slk ns'k gS tgk¡ ij cgqr lh iztkfr;ksa o /keksZ dk leUo; gqvk gSA blh dM+h esa lekftd :Ik ls ns[kk tk, le; o ifjfLFkfr ds vuqlkj ekuo lekt vius dks lkekftd lEcUk/kksa esa cka/krk gSA blh esa ekuo dks vius lkekftd o lkaLd`frd thou dks O;fLFkr djus ds fy, ftldh vko';drk iM+h og gS /keZ] jkT; vFkZ vkfn blls Hkkjr esa izkphu dky esa lukruh /keZ jgs gS ftlesa gS izeq[k ckS) /keZ] tSu /keZ] flD[k/keZ ysfdu e/;dky esa Hkkjr esa bLyke dk izos'k gqvk ftlus lukruh /keksZ dks

शोध सार

भारत एक ऐसा देश है जहाँ पर बहुत सी प्रजातियों व धर्मो का समन्वय हुआ है। इसी कड़ी में समाजिक रूप से देखा जाए तो समय व परिस्थिति के अनुसार मानव समाज अपने को सामाजिक सम्बन्धों में बांधता है। इसी में मानव को अपने सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन को व्यस्थित करने के लिए जिसकी आवश्यकता पड़ी वह है धर्म, राज्य, अर्थ आदि। भारत में प्राचीन काल में सनातनी धर्म रहे है जिसमें प्रमुख हैः बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिक्ख धर्म, लेकिन मध्यकाल में भारत में इस्लाम का प्रवेश हुआ जिसने सनातनी धर्मो को चुनौती दी और अपने अधीनस्थ बनाए। बस यही से दलित या अधीनस्थ की परम्परा चल पड़ी, जो लोग इस्लाम के अधीनस्थ बन गये उनका शोषण हुआ और जो लोग अधीनस्थ नहीं बने वह तलवार की धार से मौत के घाट उतार दिये गये और भारत में इस्लाम धर्म स्थापित हुआ। इसमें सनातनी धर्मो की सामाजिक व्यवस्था को पलट कर मुस्लिम या इस्लामिक सामाजिक व्यवस्था को थोप दिया।

मुख्य शब्द

समाज, संस्कृति, धर्म, परिप्रेक्ष्य.

भारत एक ऐसा देश है जहाँ पर बहुत सी प्रजातियों व धर्मो का समन्वय हुआ है। इसी कड़ी में समाजिक रूप से देखा जाए तो समय व परिस्थिति के अनुसार मानव समाज अपने को सामाजिक सम्बन्धों में बांधता है। इसी में मानव को अपने सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन को व्यस्थित करने के लिए जिसकी आवश्यकता पड़ी वह है धर्म, राज्य, अर्थ आदि। भारत में प्राचीन काल में सनातनी धर्म रहे है जिसमें प्रमुख हैः बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिक्ख धर्म, लेकिन मध्यकाल में भारत में इस्लाम का प्रवेश हुआ जिसने सनातनी धर्मो को चुनौती दी और अपने अधीनस्थ

बनाए। बस यही से दलित या अधीनस्थ की परम्परा चल पड़ी, जो लोग इस्लाम के अधीनस्थ बन गये उनका शोषण हुआ और जो लोग अधीनस्थ नहीं बने वह तलवार की धार से मौत के घाट उतार दिये गये और भारत में इस्लाम धर्म स्थापित हुआ। इसमें सनातनी धर्मो की सामाजिक व्यवस्था को पलट कर मुस्लिम या इस्लामिक सामाजिक व्यवस्था को थोप दिया।

इसके बाद इस देश पर सनातनी धर्मो व इस्लाम के ऊपर ईसाई धर्म का वर्चस्व स्थापित हुआ और इसमें इन सब धर्मो व समाज को अपना अधीनस्थ बनाया और 150 वर्षो तक शासन किया। इस प्रकार भारत में देखा जाए तो तीन धर्म इस्लाम, ईसाई, बौद्ध धर्म जो कि सार्वभौमिक धर्म या अन्तर्राष्ट्रीय धर्म है उनका भारत में सम्मिलन हुआ। इससे भारतीय सामाजिक व्यवस्था आजादी के बाद और चुस्त दुस्त हो गयी। आजादी के बाद से भारत में किसी भी धर्म को आश्रय नहीं दिया गया और भारत को धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित किया गया।

वर्तमान में अर्थात् आजादी के बाद भारत में मिश्रित अर्थ व्यवस्था को अपनाया गया तो मिश्रित सामाजिक व्यवस्था भी उत्पन्न हो गयी। भारत में पाया जाने वाला समाजवाद, साम्यवाद, पूँजीवाद, सारी व्यवस्थाएं व्यक्ति का शोषण करती है। शोषण से इन सब व्यवस्थाओं ने भारत में एक नया वर्ग जिससे पूंजीवादी समाज में दलित वर्ग कहते है को जन्म दिया। उपरोक्त विचारधाराओं का प्रौद्यो व हीगल ने अपने विचारों जैसे ईश्वर एक बुराई है, सम्पति एक चोरी है, आदि के माध्यम से विरोध किया क्योकि यह व्यवस्था व्यक्ति की शोषक है। भारत का सनातनी धर्म, जिसने एक अन्य अन्तर्राष्ट्रीय धर्म बौद्ध दिया उसके प्रवर्तक गौतम बुद्ध हुए, इसके अलावा अन्य धर्म जैन, सिक्ख आदि का भी विकास हुआ।

वर्तमान में भारत के लोग हिन्दू धर्म को मानने के लिए विवश नहीं है न ही वेद को मानने या सनातनी साहित्य को, क्योकि भारत में धार्मिक स्वतन्त्रता पायी जाती है। अनु0 15,16 व अनु0 17 के माध्यम से कुछ प्रावधान किये गये है और अनु0 32 के माध्यम से संवैधानिक उपचारों की व्यवस्था की गयी है। भारत में सनातनी धर्मो में कुछ विद्वान उत्पन्न हुए है, जिन्होंने भारत में सामाजिक व्यवस्था को सुधारने की सामाजिक चेतना का विकास किया है, जिनमें प्रमुख रूप से गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, कबीर, ज्योतिबाफुले, ई0वी0 रामास्वामी पेरियार, अम्बेडकर, डेविड हार्डीमैन, गाँधी, रैदास, मुंशी प्रेमचन्द्र आदि है।

विश्लेषण

सनातनी धर्मो के सुधार में प्रमुख रूप से गौतम बुद्ध हुए जिन्होने कर्म के सिद्धान्तों में विश्वास किया और चरित्र की पवित्रता की बात की और कर्म व पुर्नजन्म में विश्वास किया, ईश्वर के अस्तित्व में अविश्वास, अहिंसा और जाति व्यवस्था का विरोध किया। दूसरे प्रमुख प्रवर्तक ने भी अहिंसा, अर्पारग्रह व अनेकान्तवाद, सत्य, ब्रहाचर्य आदि सिद्धान्तों में विश्वास किया था, इनका प्रभाव मध्यकाल में कबीर व रैदास जी पर पड़ और उन्होंने सुधारक उपदेश दिये। इसके बाद ज्योतिबा फुले जिन्होंने सत्यशोधक समाज नामक संस्था का गठन किया और दलित, जाति व्यवस्था, बाल विवाह विधवा विवाह पर विचार दिये। महिला शिक्षा आदि पर विचार दिये, ई0 वी0 रामास्वामी पेरियार एक सामाजिक व राजनेता थे, जिन्होनें इन्होंने हिन्दू कर्म काण्ड, जातिव्यवस्था व शिक्षा व वैदिक साहित्य का विरोध किया।

रैदास जी हिन्दी के कवि थे इन्होंने इस्लाम व हिन्दू संस्कृति का समन्वय करने का प्रयास किया था। इसी प्रकार कबीरदास जी ने भी हिन्दू संस्कृति व मुस्लिम संस्कृति में समन्वय करने का प्रयास किया और प्रेमचन्द्र ने अपनी रचनाओं के माध्यम से दलित चेतना को जगाने का प्रयास किया था। गाँधी जी अम्बेडकर के समकालीन थें, इन्होंने भी दलितों को दलित न कहकर हरिजन कहा था अर्थात् ईश्वर की संतान।

उपरोक्त विचारों के विश्लेषण के पश्चात हम यह कह सकते है कि भारत संस्कृतियों के समन्वय का देश है। इस देश में समन्वय का ठोस प्रयास जिन्होंने किया था वह थे आधुनिक भारत के निर्माता डॉ0 भीमराव अम्बेडकर।

डॉ0 भीमराव राम जी अम्बेडकर

आपका जन्म 14 अप्रैल 1891 को महाराष्ट्र में महार जाति में हुआ था। आपके बचपन का नाम भीम सकपाल था, अपने प्रारंम्भिक जीवन में ही अपमान सहन किया, इसके बाद आप ने हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की और आप भारत में सामाजिक सुधार के जनक के रूप में जाने गये। जिन्हें बड़ौदा के महाराजा के नाम से जाना जाता था, उनके यहां गये, इन्होंने अपनी शिक्षा की व्यवस्था की और एम0ए0 अर्थशास्त्र की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद बड़ौदा साम्राज्य में नौकरी की व इसके बाद स्वयं के प्रयासों से मास्टर आफ सांइस व बार एट लॉ की उपाधि प्राप्त की और आपने तत्कालीन पूंजीवादी सरकार में वकालत का पेशा प्रारंम्भ किया था। आपने 'बहिष्कृत भारत' पत्रिका व 'इण्डिपैण्डैण्ट लेवर पार्टी' का गठन किया था।

सन् 1942 मे ंगर्वनर जनरल की परिषद् के सदस्य बने और 1947 में भारत में संविधान निर्माण की प्रारूप समिति के अध्यक्ष बनाये गये थे। 1949 में आपको स्वतन्त्र भारत का प्रथम विधि मंत्री बनाया गया और 1955 में आपने 'भारतीय बुद्ध महासभा' की स्थापना की और अन्तःता जाति व्यवस्था व सामाजिक सुधार करते जब आप थक गये तो आपने अन्ततः बौद्ध धर्म को स्वीकार किया जो कि सनातन धर्म से उत्पन्न प्रथम विश्वव्यापी धर्म है, उसको अपने स्वीकार किया। अन्ततः शारीरिक रूप से कमजोर होने पर 6 दिसम्बर सन् 1956 को आपकी मृत्यु हो गयी। आपकी रामायण और महाभारत में गहरी आस्था थी लेकिन आपके ऊपर कबीर व ज्योतिबा फुले का प्रभाव था इसलिए आपने तीन विख्यात पुस्तकों की रचना की है, जो इस प्रकार थीः

1. एनाहिलेशन आफ दा कास्ट,
2. दा अनटचेवेल्स– हू आर दे।
3. दा बुद्ध एण्ड हिज धम्य।

समाजशास्त्र में प्रभाव

समाजशास्त्र में चूंकि धर्म, संस्कृति, व्यवस्था, भौतिक पर्यावरण आदि में सामाजिक प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। इसके कारण उपरोक्त विद्धानों या प्रवर्तकों में जो सबसे अग्रणी रहे वह है डॉ0 भीमराव राम जी अम्बेडकर क्योंकि उन्होंने पूर्ववर्ती विचारों को ठोस परिणति अपनी लेखनी के माध्यम से दी जिसमें उनका प्रमुख प्रयास भारत के लिए लोकतन्त्र को अपनाना व इसके लिए विश्व का सबसे महान संविधान का निर्माण करना है। हमसे पूछा जाए कि आपका धर्म क्या है, तो हमारा धर्म भारतीयता है, इसके बाद मनुष्यता और मेरी पवित्र धार्मिक व राजनीतिक पुस्तक भारतीय संविधान है। हम न तो सार्वभौमिक धर्मो में विश्वास रखते न संकुचित धर्मो में विश्वास रखते है। भारत, भारतीयता, भारतीय संविधान जो इस धारा की उपज है और हमारा परिवार वासुदैव कुटुम्बकम् और हमारी संस्कृति मौन संस्कृति है जो शोषितो की संस्कृति है। अगर हम किसी के कर्जदार है तो जनमूलक व प्रजनन मूलक परिवार के कर्जदार है। हम वर्तमान को देखते है भूतकाल में विश्वास नहीं करते व भविष्य की आशावादी सोच रखते है।

हमारे यह विचार डॉ0 भीमराव राम जी अम्बेडकर के सामाजिक विचारों से उत्पन्न हुए है। उनमें हमने पाया है, कि उन्होंने वर्ण व्यवस्था की आलोचना में, जाति व्यवस्था के विरोध में, अछूतों के सुधार में, दलितों के प्रनिधित्व में व प्रयोग में, श्रमिक के हितो में आदि उन्होनें वर्णव्यवस्था की आलोचना की, जाति व्यवस्था के विरोध में अछूतों के सुधार के लिए, दलितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए श्रमिकों के हितों में आदि में डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर ने सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए कार्य किया।

डॉ0 भीमराव रामजी अम्बेडकर जी का जन्म सनातनी हिन्दू परिवार में हुआ था लेकिन पालन पोषण (शैक्षिक) सामंती परिवार व विकास सार्वभौमिक धर्म ईसाई धर्म व ईस्लाम धर्म के आश्रय व प्रभाव में हुआ था, इसीलिए इन्हे लोकतन्त्र, संसदीय शासन प्रणाली आदि में विश्वास हुआ था।

अब हम यहाँ दुर्खीम व बेवर के विचार देना चाहेगे चूँकि दुर्खीम समाज को महत्व देता है और बेवर व्यक्ति

को। भारत में डॉ0 भीमराव रामजी अम्बेडकर जी के जीवन में इन दोनों पाश्चात्य समाजशात्रियों के विचारो का समन्वय था। डॉ0 भीमराव रामजी अम्बेडकर जी एक समाज के रूप में भारत से प्रेम करते थे और एक व्यक्ति के रूप में उनकी पहचान भारत में संविधान निर्माता के रूप में की जाती है। हमारे समाजशास्त्र में दुर्खीम से वृहद शास्त्रीय समाजशास्त्र उत्पन्न हुआ, वहीं बेवर से प्रतीकात्मक अर्न्तक्रियावाद, प्रघटना विज्ञान, लोक विधि विज्ञान आदि का विकास हुआ।

चूँकि समाज में कुछ परजीवी होते है जिनका भरण पोषण समाज करता है, जैसे समाज अधिकृत सरकार के व्यक्ति समाज में परजीवी या परपोषी होते है जो अपना भरण पोषण स्वयं नहीं करते है। डॉ0 भीमराव रामजी अम्बेडकर जी ने प्रराम्भिक जीवन व युवावस्था समाज की सरकारी व्यवस्था के अर्न्तगत पायी थी लेकिन व्यवसाय स्वजीवी या स्वपोषी बनाकर किया व अपने प्रयासों के द्वारा सरकार व समाज का कर्ज उतार दिया। चूंकि सरकार के परजीवी, समाज को हथियाने की फ्रिक में रहते है इसीलिए समाज की सरकारी तन्त्र से अमरबेल, घास की तरह पौधे से चिपके रहते है और शोषण करते रहते है। वही समाज ने अपनी मौन संस्कृति को अपनाया है और समाज अपने शोषित करने वाले लोगों के जानता है लेकिन इनको नहीं बदल सकता है। इसी तरह का प्रावधान डॉ0 भीमराव रामजी अम्बेडकर ने शोषित समाज को बदलने के लिए सामाजिक क्रान्ति के माध्यम से किया था।

निष्कर्ष

वर्तमान में डॉ0 भीमराव राम जी अम्बेडकर ने मार्क्सवादी ईसाई धर्म की विचारधारा का व हिन्दू धर्म की समन्वयवादी विचार धारा व संस्कृति महत्व व समानतावादी इस्लामी धर्म के विचार का समन्वय कर अन्तराष्ट्रीय पहचान के रूप में, भारतीय धर्म या बौद्ध धर्म को अपनाया था। उसी बौद्ध के नाम से भारत को दुनिया जानती है वही डॉ0 भीमराव रामजी अम्बेडकर जी महत्व को रेखाकिंत करती है। भारत ने जो भानुमती का पिटारा अपना संविधान बनाया है उसका समन्वय वैश्विक है क्योंकि इस संविधान 2/3 भाग वैश्विक है 1/3 भाग भारतीय है। इस प्रकार भारतीय समाज को विश्व का सबसे विकसित कहा जा सकता, क्योकि भारत ने अपना संविधान वर्तमान में जीते हुए भूत व भविष्यकाल का भी सम्मिलन किया है।

संदर्भ सूची

1. मुखर्जी, रवीन्द्र नाथ, *''शास्त्रीय समाजशास्त्री परम्पराएं''*।
2. महाजन, धर्मवीर, महान, कमलेश, *''भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य''*।
3. बैरवा, मोहर सिंह, *''समकालीन परिदृश्य में दलित साहित्य की अभिव्यक्ति''*।
4. तिवारी, ए0के0, *''समाजशास्त्र''*।
5. सिंह, अजय, सिंह, सुरेन्द्र, *''पर्यावरण एवं समाज''*।
6. मुखर्जी, रवीन्द्र नाथ, *''समाजशास्त्र का सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य''*।
7. सिंह, अमिता, *''लिंग एवं समाज''*।
8. मुखर्जी, रवीन्द्र नाथ, महिला शोषण, एड्स एवं एन0जी0ओ0 भारतीय समाज व संस्कृति।
9. आहूजा, राम, *''भारतीय समाज''*।

****